शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनसंचार और ग्रामीण जीवन

यदुनन्दन प्रसाद उपाध्याय (शोधार्थी)
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हमारे सामाजिक जीवन में जनसंचार माध्यमों का काफी महत्त्व है। जनसंचार के साधनों में समाचार-पत्र, फिल्म, रेडियो, दूरदर्शन और वीडियो, पत्रिकाओं ने हमारे ज्ञान का विस्तार किया है और ये विश्व को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास कर रहे हैं। भारत जैसे विकासशील देश में भी जनसंचार के विभिन्न माध्यमों ने जीवन के हर क्षेत्र में प्रभवित किया है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक इत्यादि क्षेत्रों में जनसंचार के माध्यमों का प्रभाव दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। इस संदर्भ में देखा जाये तो रेडियो के बाद दूर दर्शन ने अपना क्षेत्र और अधिक व्यापक बनाया है। दूरदर्शन आज जनसंचार के एक सशक्त माध्यम के रूप में उभरा है। इसके महत्व को स्वीकार करते हुए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था "मुझे आशा है कि दूरदर्शन हमारे देश की जनता के दृष्टिकोण में व्यापकता लायेगा और वैज्ञानिक विचारधारा का प्रसार करेगा। सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध जनमत जागृत कर हमारी जनता को नवीनतम जानकरी देकर विकास की गति को बढ़ायेगा"। प्रस्तुत शोध पत्र में जनसंचार की ग्रामीण जीवन में उपयोगिता पर विचार किया गया है

प्रस्तावना

वर्तमान में विचारों ओर भावनाओं का जिन लिखित-मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों के द्वारा सफलतापूर्वक आदान-प्रदान किया जाता है। वे सभी जनसंचार माध्यम कहलाते हैं। "संचार बहुस्तरीय गतिविधि है । जनसंचार की इन सारी दिशाओं में सम्प्रेषण की सफलता देने की सारी संयोजना भाषा करती है। भाषा के बिना जनसंचार का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता , चाहे माध्यम कुछ भी हो। इसलिए जनसंचार के सभी संसाधनों के लिए हर युग में किसी न किसी भाषा का उपयोग अनिवार्य रूप से होता है। भाषा ने जनसंचार के कार्य को सुगम बनाया है। आकर्षण प्रदान किया है और विस्तार भी दिया है।"2 आज जनसंचार के माध्यम अपने अनेक रूप लेकर विश्व के कोने-कोने में फैले हुए हैं। जो कभी मीडिया का रूप लेकर घटनाओं को कवरेज करते दिखायी देते हैं , तो कभी दे श-विदेश की खास-खबरों और मनोरंजन आदि को पिछड़े इलाकें तक फैलाते नजर आते हैं।

भारत गाँवों का दे श है। इसकी अस्मिता ग्रामीण संस्कृति में पल्लवित है। विविध कलियाँ अपनी महक से इसे अनेकता में एकता की खुशबू प्रदान करती हैं। यहाँ की 70 प्रतिशत आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है, जो कहीं-न-कहीं जनसंचार के माध्यमों के संपर्क के अभाव में अपनी पूर्ण पहचान बताने और बनाने में अभी उतनी सक्षम नहीं है, जितनी आवश्यक है। यह विडम्बना की बात है कि अभी तक जनसंचार का मुख्य फोकस सत्ता की उठापटक वाली राजनीति और कारोबार जगत की ऐसी हलचलों की ओर रहा है , जिसका आम जनता के जीवन-स्तर में मजबूती लाने से कोई वास्तविक सरोकर नहीं होता। जनसंचार का

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पुष्प अभी मुख्य रूप से महानगरों और सत्ता के गलिचारों में ही खिला है। ग्रामीण क्षेत्रों की खबरें जनसंचार के माध्यमों में तभी स्थान पाती हैं , जब किसी बड़ी प्राकृतिक आपदा या व्यापक हिंसा आदि के कारण कई लोगों की जाने चली जाती हैं। ऐसे में कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय कहे जाने वाले समाचार-पत्रों और अन्य जनसंचार के माध्यमो की मानों नींद खुलती है। और उन्हें ग्रामीण जनता के कन्धे पर घड़ियाली आँसू बहाने का अवसर प्राप्त हो जाता है। खासकर बड़े नेताओं के दौरों की कवरेज के दौरान ही ग्रामीण क्षेत्रों की खबरों को प्रमुखता से स्थान मिल पाता है। फिर मामला पहले की तरह ठण्डा पड़ जाता है। किसी को यह सुनिश्चित करने की जरूरत नहीं होती कि ग्रामीण जनता की समस्याओं को स्थायी रूप से दूर करने और उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए किए गए वायदों को कब , कैसे और कौन पूरा करेगा।

जनसंचार और ग्रामीण जीवन

ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा, गरीबी और परिवहन व्यवस्था की बदहाली की वजह से जनसंचार के माध्यमों का लाभ सुदूर गाँव-देहात की जनता नहीं उठा पाती। बिजली और केबल संयोजन के अभाव में टेलीविजन भी ग्रामीण क्षेत्रों तक नहीं पहुँच पाता। ऐसे में रेड़ियो ही ऐसा स शक्त माध्यम है जो सुगमता से सुदूर गाँवो-देहातों में रहने वाले जन-जन तक बिना किसी बाधा के पहुँचता है। "रेड़ियो आज जनता का माध्यम है और इसकी पहुँच हर जगह है , इसलिए ग्रामीण पत्रकारिता के ध्वजवाहक की भूमिका रेड़ियो को ही निभानी पडेगी। "3 रेड़ियो के माध्यम से ग्रामीण पत्रकारिता को नई बुलन्दियों तक पहुँचाया जा सकता है और पत्रकारिता के क्षेत्र में नए-नए आयाम खोले जा सकते हैं। रेड़ियो एवं अन्य जनसंचार माध्यम सूचना , ज्ञान और मनोरंजन के माध्मय से जनचेतना को जगाने और सक्रिय करने का ही काम कर सकते हैं। टी.वी. चैनलों और बड़े अखबारों की सीमा यह है कि वे ग्रामीण क्षेत्रों में अपने संवाददाताओं और छायाकारों को स्थायी रूप से तैनात नहीं कर पाते। कैरियर की दृष्टि से कोई सुप्र शिक्षित पत्रकर ग्रामीण पत्रकारिता को अपनी विषेशज्ञता का क्षेत्र बनाने के लिए ग्रामीण इलाकों में लम्बे समय तक कार्य करने के लिए तैयार नहीं होता। इसलिए कभी-कभीर ग्रामांचल की खबर टी.वी. आदि पर दिखायी भी जाती है , तो वह अर्द्धसत्य ही होती है। इसलिए आव श्यक यह है कि नई ऊर्जा से लैस प्रतिभावान युवा पत्रकार अच्छे संसाधनों से प्र शिक्षण हासिल करने के बाद ग्रामीण पत्रकारिता को अपनी वि शेषज्ञता का क्षेत्र बनाने के लिए उत्साह से आगे आएँ।

आज जनसंचार के माध्यम व्यापकता ले रहे हैं। जनसंचार का अर्थ बड़ा ही व्यापक और प्रभावकारी होता जा रहा है। प्राचीन काल में लोकमत को जानने अथवा लोकरूचि को साँवरने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाता था। वे आज के वैज्ञानिक युग में अधिक उपयोगी नहीं रह गये हैं। अतः वैज्ञानिक विकास के साथ-साथ आज जनसंचार के माध्यमों का भी विकास होता जा रहा है। जिनमें समाचार-पत्र, मुद्रित ग्रंथ, रेड़ियो, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट इत्यादि प्रमुख हैं। अतः अब किसी जन समुदाय की आवाज को विश्व की आवाज बनाना चंद मिनटों का काम हो गया है। परंतु फिर भी जनंसचार की वास्तविक पकड़ अभी शहरों तक ही सीमित है। ग्रामीण क्षेत्र अभी भी इन माध्यमों से काफी हद तक अछूते हैं। जबकि इसके विपरीत शहरों में जनसंचार के माध्यम इतनी व्यापकता प्राप्त कर गये हैं कि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अब उन पर फूहड़ता और अ श्लीलता दिखाने के अलावा दूसरी कोई खबर ही नहीं होती , तथापि ग्रामांचल अपनी दारूण कथा कहलवाने को कब से मिन्नतें कर रहा है। पर जनसंचार के स्वंयभू दिग्गजों की दृश्टि उन्हें देख कर भी अनदेखा कर देती है। मनोहर श्याम जोशी जनसंचार के दुश्प्रभाव का उल्लेख करते हुए लिखते हैं, "मीडिया दैत्यों ने 1934 के कानून का यह आग्रह भी भुला दिया है कि जनहितकारी और स्थानीय महत्व के कार्यक्रम दिखाये जाएँ और बच्चों को सुसंस्कृत बनाने का खास ध्यान रखा जाये। अच्छे कार्यक्रम तो वे अब दिखावा करने तक के लिए भी नहीं दिखाते और सभी जगह बिकने वाले सेक्स और हिंसामय कार्यक्रमों की मात्रा बढ़ाते ही जाते हैं। इस तरह का घटिया मनोरंजन परोसने वाले ये मीडिया दैत्य इराक के महाविनाशकारी अस्त्र जैसे हवाई मुद्दे को पूरे विश्वास के साथ उछाल कर और अमेरिका अस्त्रों से बरबाद ईरानी नागरिक को ठोस व्यथा को हवा में उड़कार सामाजिक सोच को अमानवीय ढाँचे में ढाल रहे हैं। महाविनाशकारी तों वे स्वंय हैं।"4

निष्कर्ष

अतः जनसंचार के साधनों की सार्थकता तभी मानी जायेगी जब वे अछूते जनसमुदाय की अकथनीय पीड़ा को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सामने लाने का प्रयास करेंगे।

आज विश्व ग्लोबल विलेज बनाता जा रहा है। सीरिया और ईरान का कष्ट पूरे विश्व की वेदना बन गई है। किसी एक की हरकत पूरे जनसमुदाय को भुगतनी पड़ रही है। किसी एक का सिद्धान्त पूरी पृथ्वी में हलचल मचा सकता है। ऐसे में भी यदि जनसंचार अछूते ग्रामांचलों की तरफ नहीं मुड़ा तो यह घोर निरा शा और धिक्कार की बात है। आज मनुष्य पर भौतिक साधनों की प्रचुरता है। एक दे श विकास के नाम पर नए-नए उद्योग धंधे और गगनचुम्बी इमारतें बनाता जा रहा है, ताकि वह दूसरे देश के सामने अकड़ कर खड़ा हो सके। परंतु उसकी यह अकड़न उसे जड़ बनाती जा रही है, उसे कुण्ठा और तनाव की भट्टी में झोंकती जा रही है, जिसे जनसंचार के माध्यम दिखाकर समाज को दिकभ्रमित कर रहे हैं जो कि वास्तविक जनसमुदाय की पीड़ा न हो कर पूँजीवादी लोगों की अनाव श्यक झूठी दर्दकथा है। अतः जनसंचार को चाहिए कि वह ग्रामीण समाज की कुटिया में विश्राम करे न कि पूंजीपतियों के टुकड़े पर पले। गाँव के भोले-भाले लोगों की दारूण कथा को विश्व-वेदना बनाकर उसका पूर्ण निराकरण ढूंढें और उनकी भाषा, संस्कृति और मान्यताओं में विश्व-शान्ति की नई भूमि खोजे, जिसमें निश्चित ही लोकमंगल और विश्व-कल्याण की ऐसी फसल उगेगी, जो सभी के लिए पौष्टिक और आनंदवर्द्धक होगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. कुरूक्षेत्र, नवम्बर 1992, पृष्ठ.25
2. मीडिया की हिन्दी, गवेषणा-2011, पृष्ठ 89
3. भारत में ग्रामीण पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप- सृजन शिल्पी, 17/02/06 (अनामी शर्मा बाबल, ब्लाक)
4. आज का समाज , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली,संस्करण 2007,पृ.113